मेलबर्न फिल्म फेस्टिवल में रेखा को मिलेगा सम्मान

भारतीय सिनेमा की दिग्गज अभिनेत्री रेखा इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न 2026 में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में शामिल होंगी और उन्हें भारतीय सिनेमा में उनके अतुलनीय योगदान के लिए प्रतिष्ठित 'एक्सीलेंस इन सिनेमा' सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।फेस्टिवल के आयोजकों ने बताया कि रेखा की कालजयी फिल्म 'उमराव जान' की विशेष स्क्रीनिंग भी आयोजित की जाएगी। मुजफ्फर अली निर्देशित इस फिल्म में उनके अभिनय को भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों में गिना जाता है. रेखा ने कहा कि 'उमराव जान' उनकी यादों और दर्शकों के दिलों में आज भी जीवित है. उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर फिल्म को सम्मान मिलना उनके लिए भावुक और गौरवपूर्ण क्षण है. उन्होंने 'एक्सीलेंस इन सिनेमा' सम्मान को अपने फिल्मी सफर के साथ-साथ उन सभी फिल्मकारों, लेखकों, संगीतकारों और सहयोगियों को समर्पित किया, जिन्होंने उनके जीवन और करियर को समृद्ध बनाया.

फेस्टिवल की परंपरा के तहत 15 अगस्त को रेखा मेलबर्न में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भी फहराएंगी. इस समारोह में ऑस्ट्रेलिया में बसे भारतीय समुदाय, फिल्मकार, कलाकार और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल होंगे. आईएफएफएम की संस्थापक एवं फेस्टिवल निदेशक मितु भौमिक लांगे ने कहा कि रेखा भारतीय सिनेमा की सदाबहार आइकन हैं और उनकी विरासत दुनिया भर के दर्शकों को प्रेरित करती रही है. उन्होंने कहा कि भारत के स्वतंत्रता दिवस पर रेखा द्वारा तिरंगा फहराना और उन्हें 'एक्सीलेंस इन सिनेमा' सम्मान प्रदान करना फेस्टिवल के लिए गर्व का विषय है. तीन से 23 अगस्त तक आयोजित होने वाला इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न भारतीय सिनेमा के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में शामिल है.

नवाजुद्दीन की 'नकाब' बनी सुपरहिट, शोरा की वाहवाही

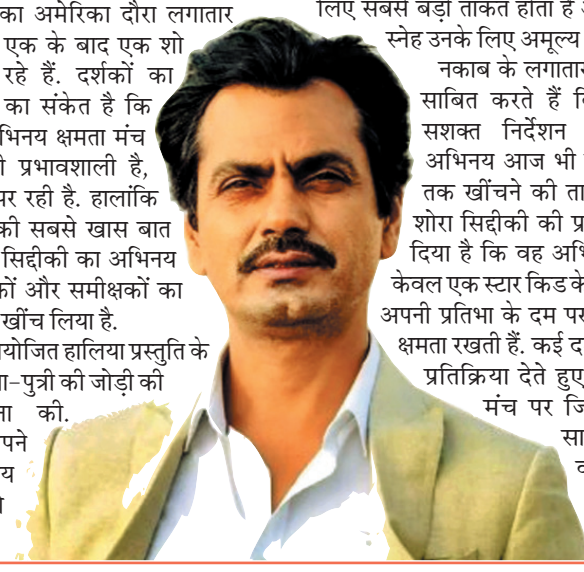

बॉलीवुड के दमदार अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी की थिएटर में वापसी बेहद सफल साबित हो रही है. उनके नाटक 'नकाब' का अमेरिका दौरा लगातार चर्चा में है, जहां एक के बाद एक शो हाउसफुल चल रहे हैं. दर्शकों का उत्साह इस बात का संकेत है कि नवाजुद्दीन की अभिनय क्षमता मंच पर भी उतनी ही प्रभावशाली है, जितनी बड़े पर्दे पर रही है. हालांकि इस सफल दौरे की सबसे खास बात उनकी बेटी शोरा सिद्दीकी का अभिनय रहा, जिसने दर्शकों और समीक्षकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है.

शिकागो में आयोजित हालिया प्रस्तुति के बाद दर्शकों ने पिता-पुत्री की जोड़ी की खुलकर सराहना की. नवाजुद्दीन ने अपने अनुभवी अभिनय से किरदार को जीवंत बनाया, वहीं शोरा ने आत्मविश्वास और भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ मंच पर अपनी अलग पहचान बनाई. दर्शकों का कहना है कि शोरा का अभिनय बेहद स्वाभाविक, संतुलित और प्रभावशाली रहा, जिसने नाटक को और भी खास बना दिया.

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने सोशल मीडिया के जरिए दर्शकों का आभार जताते हुए कहा कि उन्हें और पूरी टीम को जिस तरह का प्यार और समर्थन मिल रहा है, वह उनके लिए बेहद प्रेरणादायक है. उन्होंने कहा कि थिएटर से मिलने वाला सीधा संवाद कलाकार के लिए सबसे बड़ी ताकत होता है और दर्शकों का यह स्नेह उनके लिए अमूल्य है.

नकाब के लगातार हाउसफुल शो यह साबित करते हैं कि अच्छी कहानी, सशक्त निर्देशन और प्रभावशाली अभिनय आज भी दर्शकों को थिएटर तक खींचने की ताकत रखते हैं. वहीं शोरा सिद्दीकी की प्रस्तुति ने यह संकेत दिया है कि वह अभिनय की दुनिया में केवल एक स्टार किड के रूप में नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा के दम पर पहचान बनाने की क्षमता रखती हैं. कई दर्शकों ने शो के बाद प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि शोरा ने मंच पर जिस परिपक्वता के साथ अभिनय किया, वह उनकी मेहनत और तैयारी को दर्शाता है.

सारा ने निभाया अपना खास रिवाज

बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान एक बार फिर अपने आध्यात्मिक जुड़ाव और सादगी भरे अंदाज को लेकर चर्चा में हैं. दिल्ली दौरे पर आईं सारा ने अपनी पुरानी परंपरा को निभाते हुए गुरुद्वारा बंगला साहिब पहुंचकर मत्था टेका. उनके साथ उनकी करीबी दोस्त सारा वैसोहा भी मौजूद थीं. दोनों ने पूरे सम्मान के साथ सिर पर दुपट्टा ओढ़ा और गुरुद्वारे में अरदास की.

उन्होंने व्हाइट शर्ट और ब्लू डेनिम पहनी थी, जबकि उनकी दोस्त भी लगभग उसी रंग के परिधान में दिखाई दीं. दोनों का सिंपल लुक और धार्मिक स्थल पर विनम्र व्यवहार प्रशंसकों को काफी पसंद आया. कई लोगों ने सोशल मीडिया पर उनकी आस्था और जमीन से जुड़े स्वभाव की सराहना की. सारा अली खान पहले भी कई बार यह बता चुकी हैं कि दिल्ली आने पर गुरुद्वारा बंगला साहिब जाना उनके लिए एक खास परंपरा बन चुका है. व्यस्त शूटिंग शेड्यूल और सार्वजनिक कार्यक्रमों के बावजूद वह समय निकालकर यहां मत्था टेकने जरूर पहुंचती हैं.

उक्किरी बिक्किरी' में छाई राशा थडानी की अदाएं

रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी ने अपने नए तेलुगु गाने 'उक्किरी बिक्किरी' के जरिए एक बार फिर दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है. आने वाली फिल्म 'श्रीनिवासा मंगापुरम' का यह रोमांटिक गीत रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर ट्रेंड करने लगा है. गाने में राशा के साथ अभिनेता जयकृष्ण घट्टामनेनी पहली बार स्क्रीन साझा करते नजर आ रहे हैं और दोनों की नई जोड़ी को दर्शकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है. उक्किरी बिक्किरी की सबसे बड़ी खासियत इसकी मनमोहक लोकेशन है. पहाड़ों, हरियाली और प्राकृतिक वादियों के बीच फिल्माए गए दृश्य गाने को एक अलग ही आकर्षण देते हैं. सिनेमैटोग्राफी दर्शकों को शुरुआत से अंत तक बांधे रखती है और हर फ्रेम किसी पोस्टकार्ड जैसा खूबसूरत नजर आता है.

गाने में राशा थडानी अपने ग्लैमरस लुक, सहज अभिनय और बेहतरीन डांस मूव्स से प्रभावित करती हैं. उनके चेहरे के भाव और स्क्रीन प्रेजेंस गाने को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं. वहीं जयकृष्ण घट्टामनेनी भी अपने आत्मविश्वास और सहज अभिनय से प्रभावित करते हैं.

टेलीविजन हलचल

अनुपमा के सामने श्रुति का दांव पड़ गया उल्टा

सुपरहिट शो 'अनुपमा' में कुकिंग प्रतियोगिता का रोमांच लगातार बढ़ता जा रहा है. हर नया राउंड प्रतियोगियों की परीक्षा लेने के साथ रिश्तों और भावनाओं की भी कसौटी बनता नजर आ रहा है. आगामी एपिसोड में ब्लाइंडफोल्ड चैलेंज कहानी में बड़ा मोड़ लेकर आएगा, जहां श्रुति की एक गलती प्रेम की मुश्किलें बढ़ा देगी. अनुपमा और दिग्विजय की बेहतरीन समझदारी की जजों द्वारा सराहना की जाती है. वहीं प्रेम और राही भी तालमेल के साथ टास्क पूरा करते हैं.

शांति निकेतन की जंग में भिड़े तुलसी और करण

चर्चित शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में कहानी एक बार फिर ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है, जहां रिश्ते, भरोसा और परिवार की एकता कठिन परीक्षा से गुजरते नजर आएंगे. आने वाले एपिसोड में तृप्ति की वापसी विरानी परिवार में नया तूफान लेकर आती है. उसकी चालों का सबसे बड़ा असर करण पर पड़ता है, जो अपनी मां तुलसी के खिलाफ खड़ा हो जाता है. तृप्ति के बहकावे में आकर करण ऐसा फैसला लेता है, जो पूरे परिवार को हिला देता है. वह उन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर देता है, जिनसे तृप्ति को शांति निकेतन पर नियंत्रण मिल सकता है. यह कदम न केवल तुलसी के लिए भावनात्मक झटका होता है, बल्कि परिवार के भीतर गहरे मतभेद भी पैदा कर देता है.

कृषि जगत

बारिश में टमाटर की खेती का सही तरीका जानें

मानसून के दौरान टमाटर की खेती किसानों के लिए लाभदायक साबित हो सकती है, बशर्ते खेती वैज्ञानिक तरीके से की जाए. इस मौसम में पर्याप्त नमी मिलने से पौधों की बढ़वार अच्छी होती है, लेकिन लगातार बारिश के कारण जलभराव, फफूंद जनित रोग और कीटों का खतरा भी बढ़ जाता है. इसलिए खेती की शुरुआत से ही सही प्रबंधन अपनाना आवश्यक है.

टमाटर की खेती के लिए ऐसी भूमि का चयन करें जहां पानी निकासी की उचित व्यवस्था हो. भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में उठी हुई क्यारियां या मेड़ बनाकर पौध रोपाई करना बेहतर रहता है. इससे पौधों की जड़ें पानी में डूबने से बचती हैं और सड़न की संभावना कम हो जाती है. खेत में जैविक खाद, गोबर की सड़ी खाद और संतुलित मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश का उपयोग पौधों की मजबूत बढ़वार में मदद करता है. मानसून के लिए रोग प्रतिरोधी और अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों का चयन करना भी महत्वपूर्ण है. पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखने से हवा का संचार बेहतर होता है और रोगों का प्रकोप कम होता है. पौधों को सहारा देने के लिए बांस या रस्सी का उपयोग करने से फल जमीन के संपर्क में नहीं आते, जिससे उनकी गुणवत्ता बनी रहती है और सड़न की संभावना घटती है. बारिश के मौसम में झुलसा रोग, पत्ती धब्बा, जीवाणुजनित मुरझान तथा फल सड़न जैसी समस्याएं अधिक देखने को मिलती हैं. इसलिए खेत का नियमित निरीक्षण करें और शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार उचित जैविक या अनुशंसित फफूंदनाशी का प्रयोग करें. सफेद मक्खी, माहू और फल छेदक कीट की निगरानी भी जरूरी है.

पीले चिपचिपे फंदों और समेकित कीट प्रबंधन तकनीकों का उपयोग नुकसान कम करने में सहायक होता है. सिंचाई केवल आवश्यकता के अनुसार करें. यदि लगातार वर्षा हो रही है तो अतिरिक्त सिंचाई से बचें. वहीं वर्षा रुकने के बाद मिट्टी में नमी की स्थिति देखकर ही पानी दें.

गन्ने की फसल बचाने के जानिए आसान उपाय

मानसून के दौरान गन्ने की फसल में नमी बढ़ने के कारण कई प्रकार के हानिकारक कीट तेजी से सक्रिय हो जाते हैं. इनमें तना छेदक, पायरिला, सफेद गिडार, दीमक और जड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले अन्य कीट प्रमुख हैं.

यदि इनका समय रहते नियंत्रण नहीं किया जाए तो गन्ने की बढ़वार रुक जाती है, पौधे कमजोर हो जाते हैं और उत्पादन में भारी गिरावट आ सकती है. इसलिए किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करते रहना चाहिए. सबसे पहले खेत में जलभराव की स्थिति नहीं बनने दें. लंबे समय तक पानी भरा रहने से कीटों और रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है. खेत की नालियों की समय-समय पर सफाई करें ताकि अतिरिक्त पानी आसानी से बाहर निकल सके. साथ ही सूखी और संक्रमित पत्तियों को हटाकर खेत से बाहर नष्ट कर दें, जिससे कीटों का फैलाव कम हो.यदि गन्ने की पत्तियों पर पायरिला या अन्य रस चूसने वाले कीट दिखाई दें तो पीले चिपचिपे फंदों का उपयोग करें. तना छेदक की रोकथाम के लिए प्रभावित पौधों को तुरंत खेत से हटाएं.

गमले में कैसे उगाएं हरा-भरा धनिया

घर के गमले में धनिया उगाना बेहद आसान है और थोड़ी-सी देखभाल के साथ आप पूरे मौसम ताजी हरी पत्तियों का आनंद ले सकते हैं. धनिया की खेती के लिए सबसे पहले 8 से 12 इंच गहरा गमला चुनें, जिसमें नीचे पानी निकासी के लिए छेद अवश्य हों. गमले में भरने के लिए दो भाग उपजाऊ मिट्टी, एक भाग गोबर की सड़ी खाद या जैविक खाद और एक भाग रेत या नारियल के रेशे का मिश्रण तैयार करें. इससे मिट्टी भुरभुरी रहेगी और जड़ों का विकास बेहतर होगा. बोआई से पहले धनिया के बीजों को हल्का दबाकर दो हिस्सों में तोड़ लें. इससे अंकुरण तेजी से होता है. इसके बाद बीजों को लगभग एक से डेढ़ सेंटीमीटर की गहराई पर छिड़काव विधि से बोएं और ऊपर से हल्की मिट्टी की परत डाल दें. बोआई के तुरंत बाद फव्वारे वाली बाल्टी या स्प्रे बोतल से हल्का पानी दें, ताकि बीज अपनी जगह से न हटें.

दूध उत्पादन बढ़ाने में हरा चारा कितना जरूरी

भारत दुनिया के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देशों में शामिल है और यहां लाखों किसानों की आय का प्रमुख स्रोत पशुपालन है. ऐसे में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए पशुओं के पोषण पर विशेष ध्यान देना बेहद जरूरी है. पशु चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि हरा चारा पशुओं के संतुलित आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो उनकी सेहत और दुग्ध उत्पादन दोनों को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाता है.

हरे चारे में प्राकृतिक रूप से प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, विटामिन ए, विटामिन ई और अन्य आवश्यक खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं. ये पोषक तत्व पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने और शरीर की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते हैं. जब पशु स्वस्थ रहते हैं, तो उनका दुग्ध उत्पादन भी बेहतर होता है. बरसीम, नेपियर घास, मक्का, ज्वार, बाजरा और लोबिया जैसे हरे चारे पशुओं के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं. इनका नियमित और संतुलित उपयोग करने से दूध की मात्रा के साथ-साथ उसमें वसा और अन्य पोषक तत्वों की गुणवत्ता में भी सुधार देखा जा सकता है.

हालांकि, केवल हरा चारा खिलाना पर्याप्त नहीं है. इसके साथ सूखा चारा, संतुलित पशु आहार , साफ पानी और खनिज मिश्रण भी देना आवश्यक है. पशुपालकों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि चारे में अचानक बदलाव न करें.

यंग इंडिया

रेलवे में 6557 टेक्नीशियन भर्ती, आज आखिरी मौका

रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) ने तकनीशियन ग्रेड-एक (सिग्नल) और तकनीशियन ग्रेड-तीन के कुल 6557 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंचा दी है। इच्छुक अभ्यर्थी 29 जुलाई 2026 तक आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं.

आवेदन की अंतिम तिथि के बाद 1 अगस्त से 10 अगस्त 2026 तक आवेदन पत्र में संशोधन का अवसर भी दिया जाएगा. इस भर्ती में तकनीशियन ग्रेड-एक (सिग्नल) के 323 पद और तकनीशियन ग्रेड-तीन के 6242 पद शामिल हैं. चयन प्रक्रिया को सरल रखते हुए इस बार भी अभ्यर्थियों को केवल एक कंप्यूटर आधारित परीक्षा देनी होगी. परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों का चयन रेलवे के विभिन्न मंडलों में रिक्त पदों पर किया जाएगा.

योग्यता की बात करें तो तकनीशियन ग्रेड-एक (सिग्नल) के लिए भौतिक विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी या उपकरण अभियांत्रिकी में विज्ञान स्नातक, तीन वर्षीय अभियांत्रिकी डिप्लोमा या अभियांत्रिकी की डिग्री आवश्यक है. वहीं अधिकांश तकनीशियन ग्रेड-तीन पदों के लिए दसवीं पास के साथ संबंधित व्यवसाय में राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद या राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद से मान्यता प्राप्त औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाणपत्र अथवा प्रशिक्षुता पाठ्यक्रम पूर्ण होना आवश्यक है. हालांकि इस भर्ती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि तकनीशियन ग्रेड-तीन (सिग्नल एवं दूरसंचार) पद के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाणपत्र अनिवार्य नहीं है. जिन अभ्यर्थियों ने भौतिक विज्ञान और गणित विषयों के साथ बारहवीं उत्तीर्ण की है, वे भी इस पद के लिए आवेदन करने के पात्र हैं. इससे बड़ी संख्या में ऐसे युवाओं को अवसर मिलेगा, जिन्होंने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है.

आयु सीमा के अनुसार ग्रेड-एक पदों के लिए अभ्यर्थी की आयु 18 से 33 वर्ष तथा ग्रेड-तीन के लिए 18 से 30 वर्ष निर्धारित की गई है. आयु की गणना 1 जुलाई 2026 के आधार पर होगी. आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों को नियमानुसार आयु सीमा में छूट प्रदान की जाएगी. वेतन की बात करें तो तकनीशियन ग्रेड-एक (सिग्नल) के लिए प्रारंभिक मूल वेतन 29,200 रुपये (वेतन स्तर-पांच) निर्धारित है.

2107 असिस्टेंट प्रोफेसर पदों पर जल्द होगी भर्ती

उत्तर प्रदेश के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती की प्रक्रिया एक बार फिर शुरू होने जा रही है. करीब चार वर्ष बाद होने वाली इस भर्ती के लिए उच्च शिक्षा निदेशालय ने 44 विषयों के कुल 2107 रिक्त पदों का प्रस्ताव उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग को भेज दिया है.

अब निदेशालय और चयन आयोग के बीच अंतिम औपचारिकताएं पूरी होने के बाद भर्ती का विज्ञापन जारी किए जाने की संभावना है. प्रदेश के 330 सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में यह भर्ती की जाएगी. इनमें 1699 पद सह-शिक्षा महाविद्यालयों तथा 408 पद महिला महाविद्यालयों के हैं. प्रदेश के 21 अल्पसंख्यक महा विद्यालयों ने किसी भी रिक्त पद की सूचना उपलब्ध नहीं कराई है. इस भर्ती में सबसे अधिक 195 पद हिंदी विषय के हैं. इसके अलावा रसायन विज्ञान में 178, बीएड में 176, अंग्रेजी में 111, वनस्पति विज्ञान में 104, अर्थशास्त्र में 103 तथा संस्कृत में 100 पद रिक्त हैं. इसके साथ ही वाणिज्य, भौतिक विज्ञान, भूगोल, राजनीति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, विधि, इतिहास और गणित जैसे विषयों में भी बड़ी संख्या में रिक्तियां उपलब्ध हैं. भर्ती की एक खास बात यह भी है कि 17 विषयों में 50 से अधिक पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी. इससे विभिन्न विषयों के अभ्यर्थियों को पर्याप्त अवसर मिलने की उम्मीद है. वहीं दूसरी ओर कुछ विषय ऐसे भी हैं, जिनमें रिक्तियों की संख्या काफी कम है.

बैंक क्लर्क भर्ती के आवेदन 1 अगस्त से शुरू

इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सनल सिलेक्शन ने कस्टमर सर्विस एसोसिएट भर्ती 2027-28 चक्र का संक्षिप्त भर्ती कार्यक्रम जारी कर दिया है. इस भर्ती के लिए ऑनलाइन पंजीकरण की प्रक्रिया 1 अगस्त 2026 से शुरू होकर 21 अगस्त 2026 तक चलेगी. बैंकिंग क्षेत्र में सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे लाखों अभ्यर्थियों के लिए यह वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण भर्तियों में से एक मानी जा रही है. भर्ती का नाम सामान्य भर्ती प्रक्रिया - कस्टमर सर्विस एसोसिएट-16 रखा गया है. पहले जिस पद को क्लर्क कहा जाता था, अब उसे कस्टमर सर्विस एसोसिएट नाम दिया गया है. हालांकि पद के नाम में बदलाव के अलावा भर्ती प्रक्रिया, पात्रता, परीक्षा का प्रारूप और चयन व्यवस्था में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं किया गया है.

बीटेक की खाली सीटों पर दाखिले

सेंट्रल सीट एलोकेशन बोर्ड काउंसलिंग 2026 के लिए पंजीकरण प्रक्रिया 28 जुलाई से शुरू हो गई है. यह काउंसलिंग उन विद्यार्थियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, जिन्हें संयुक्त सीट आवंटन प्राधिकरण (जोसा) की काउंसलिंग में मनचाहा संस्थान या शाखा नहीं मिल सकी या जिन्हें कोई सीट आवंटित नहीं हुई. सीसैब के माध्यम से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय अभियांत्रिकी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर तथा 50 से अधिक सरकारी वित्तपोषित तकनीकी संस्थानों की रिक्त बीटेक सीटों पर प्रवेश दिया जाएगा.

इस वर्ष काउंसलिंग प्रक्रिया में दो विशेष चरण आयोजित किए जाएंगे. पंजीकरण और विकल्प भरने की प्रक्रिया 28 जुलाई से 5 अगस्त तक चलेगी. पहला अभ्यास परिणाम 31 जुलाई को जारी होगा, जबकि पहले चरण का सीट आवंटन परिणाम 6 अगस्त को घोषित किया जाएगा.